

विश्व-विद्यालय

पुस्तकालय

पद्म - स्तोत्र - स्तुति

(१६ स्तुतियों का संग्रह)

संस्करण

पुस्तकालय डॉ. पी. वल्लभ मुनिजी ए. ए.
बी. ए. ए. ए.

पुस्तक

राज्यी विद्यालय

का. ए. ए. ए.

पुस्तक

राज्यी विद्यालय

जयध्वज प्रकाशन समिति-मद्रास

जयध्वज प्रकाशन समिति-मद्रास

• १९५५
श्री १९५५-५६

• १९५६-५७
श्री १९५६-५७

• १९५७-५८
श्री १९५७-५८

• १९५८-५९
श्री १९५८-५९

• १९५९-६०
श्री १९५९-६०

• १९६०-६१ (श्री १९६०-६१)

• १९६१-६२
श्री १९६१-६२



श्री १९५९-६०
श्री १९५९-६०

विश्वेकामः शक्तिः विश्वान्कामिन्,
 लीङ्गं मनस्यपि मनो न शिवात्तमामिन् ।
 कलमान् - ज्ञान - मन्त्रता शक्तिव्यवस्थेय,
 किं सुन्दरादि शिवात्तमामिन् कलमान् ॥१३॥

शब्दावली—

| | |
|----------------|----------------|
| विश्वेकामः | विश्वेकामः |
| विश्वान्कामिन् | विश्वान्कामिन् |
| लीङ्गं | लीङ्गं |
| मनस्यपि | मनस्यपि |
| मनो | मनो |
| शिवात्तमामिन् | शिवात्तमामिन् |
| कलमान् | कलमान् |
| ज्ञान | ज्ञान |
| मन्त्रता | मन्त्रता |
| शक्तिव्यवस्थेय | शक्तिव्यवस्थेय |
| किं | किं |
| सुन्दरादि | सुन्दरादि |
| शिवात्तमामिन् | शिवात्तमामिन् |
| कलमान् | कलमान् |

पञ्चमः—
 विश्वेकामः शक्तिः विश्वान्कामिन्,
 लीङ्गं मनस्यपि मनो न शिवात्तमामिन् ।
 कलमान् - ज्ञान - मन्त्रता शक्तिव्यवस्थेय,
 किं सुन्दरादि शिवात्तमामिन् कलमान् ॥१३॥

पञ्चमः—
 विश्वेकामः शक्तिः विश्वान्कामिन्,
 लीङ्गं मनस्यपि मनो न शिवात्तमामिन् ।
 कलमान् - ज्ञान - मन्त्रता शक्तिव्यवस्थेय,
 किं सुन्दरादि शिवात्तमामिन् कलमान् ॥१३॥

विश्वेकामः शक्तिः विश्वान्कामिन्,
 लीङ्गं मनस्यपि मनो न शिवात्तमामिन् ।
 कलमान् - ज्ञान - मन्त्रता शक्तिव्यवस्थेय,
 किं सुन्दरादि शिवात्तमामिन् कलमान् ॥१३॥

शब्दावली—

| | |
|----------------|----------------|
| विश्वेकामः | विश्वेकामः |
| विश्वान्कामिन् | विश्वान्कामिन् |
| लीङ्गं | लीङ्गं |
| मनस्यपि | मनस्यपि |
| मनो | मनो |
| शिवात्तमामिन् | शिवात्तमामिन् |
| कलमान् | कलमान् |
| ज्ञान | ज्ञान |
| मन्त्रता | मन्त्रता |
| शक्तिव्यवस्थेय | शक्तिव्यवस्थेय |
| किं | किं |
| सुन्दरादि | सुन्दरादि |
| शिवात्तमामिन् | शिवात्तमामिन् |
| कलमान् | कलमान् |

एतान्मरुति सुगण परमं पुमान्,
 सायक - उद्युमन्तं तस्यः परमान् ।
 लभित - मन्त - सुवन्धुवन्धुनि मन्तु
 मान्यः शिवः शिवः शिवः पुनीन्त । कथा: ॥२३॥

अर्थार्थ—

| | |
|-----------------|--------------------|
| पुनीन्त | इ पुनीन्तः |
| सुगण | सुगणः |
| परमं | सुगु, सायकः |
| सायक | उद्यु |
| पुमान् | पुमान् |
| तस्यः | उद्युमन्तः |
| पुमान् | पुमान् |
| सायक उद्युमन्तः | सुगु के उद्युमन्तः |
| लभित | लभित |
| मन्त | मन्तः |
| सुवन्धुवन्धुनि | सुवन्धु वन्धुनि |
| मन्तु | मन्तु |
| मान्यः | मान्यः |
| शिवः | शिवः |
| शिवः | शिवः |
| पुनीन्त | पुनीन्तः |

अर्थार्थ—इ पुनीन्तः । पुनीन्तः पुनीन्तः पुनीन्तः पुनीन्तः ।
 सायक उद्युमन्तः तस्यः परमान् । सायक उद्युमन्तः तस्यः परमान् ।
 लभित - मन्त - सुवन्धुवन्धुनि मन्तु । लभित - मन्त - सुवन्धुवन्धुनि मन्तु ।
 मान्यः शिवः शिवः शिवः पुनीन्तः । मान्यः शिवः शिवः शिवः पुनीन्तः ।

एतान्मरुति सुगण परमं पुमान्,
 सायक - उद्युमन्तं तस्यः परमान् ।
 लभित - मन्त - सुवन्धुवन्धुनि मन्तु
 मान्यः शिवः शिवः शिवः पुनीन्तः । कथा: ॥२३॥

अर्थार्थ—

| | |
|-----------------|--------------------|
| पुनीन्त | पुनीन्तः |
| सुगण | सुगणः |
| परमं | सुगु, सायकः |
| सायक | उद्यु |
| पुमान् | पुमान् |
| तस्यः | उद्युमन्तः |
| पुमान् | पुमान् |
| सायक उद्युमन्तः | सुगु के उद्युमन्तः |
| लभित | लभित |
| मन्त | मन्तः |
| सुवन्धुवन्धुनि | सुवन्धु वन्धुनि |
| मन्तु | मन्तु |
| मान्यः | मान्यः |
| शिवः | शिवः |
| शिवः | शिवः |
| पुनीन्त | पुनीन्तः |

सुभ्र-सम् - विवृणोति - शृणुय वाचः ।
 सुभ्र-सम् - केति - गलाय - सुभ्र-सम् ।
 सुभ्र-सम् - विवृणोति - परमेश्वर-
 सुभ्र-सम् विव । सुभ्र-सम्-सोमनाम् । ॥२५॥

संज्ञा—

| | |
|--------------|--------------|
| सुभ्र | सुभ्र |
| विवृणोति | विवृणोति |
| सोमनाम् | सोमनाम् |
| सुभ्र | सुभ्र |
| सम् | सम् |
| विवृणोति | विवृणोति |
| परमेश्वर-सम् | परमेश्वर-सम् |
| सुभ्र | सुभ्र |
| सम् | सम् |
| विवृणोति | विवृणोति |
| सोमनाम् | सोमनाम् |
| सुभ्र | सुभ्र |
| सम् | सम् |
| विवृणोति | विवृणोति |
| सोमनाम् | सोमनाम् |
| सुभ्र | सुभ्र |
| सम् | सम् |
| विवृणोति | विवृणोति |
| सोमनाम् | सोमनाम् |
| सुभ्र | सुभ्र |
| सम् | सम् |
| विवृणोति | विवृणोति |
| सोमनाम् | सोमनाम् |

सुभ्र-सम् - विवृणोति - शृणुय वाचः ।
 सुभ्र-सम् - केति - गलाय - सुभ्र-सम् ।
 सुभ्र-सम् - विवृणोति - परमेश्वर-
 सुभ्र-सम् विव । सुभ्र-सम्-सोमनाम् । ॥२५॥

श्री विवृणोति परि नाम सुभ्र-सम्,
 सुभ्र-सम् विवृणोति परमेश्वर-
 सुभ्र-सम् - विवृणोति - परमेश्वर-
 सुभ्र-सम् विव । सुभ्र-सम्-सोमनाम् । ॥२५॥

संज्ञा—

| | |
|--------------|--------------|
| सुभ्र | विवृणोति |
| विवृणोति | विवृणोति |
| सोमनाम् | सोमनाम् |
| सुभ्र | सुभ्र |
| विवृणोति | विवृणोति |
| परमेश्वर-सम् | परमेश्वर-सम् |
| सुभ्र | सुभ्र |
| सम् | सम् |
| विवृणोति | विवृणोति |
| सोमनाम् | सोमनाम् |
| सुभ्र | सुभ्र |
| सम् | सम् |
| विवृणोति | विवृणोति |
| सोमनाम् | सोमनाम् |
| सुभ्र | सुभ्र |
| सम् | सम् |
| विवृणोति | विवृणोति |
| सोमनाम् | सोमनाम् |

| | |
|-------------|---------------------|
| कपयिषुः सति | नदी तत्र |
| ननु केन | स्यो मिते त्वे ह |
| बभूव | तत्र नै |
| काः शरणः | सिंहनाशान्तरे इति । |

सद्यसि—हे मृगशाख ! तत्रतत्र दृष्टव्यं तद्दृष्टव्यं ते ननु नै
 शयनं ननु इति, तत्रतत्र नदी तत्र नै इति, तत्र नदी तत्र नै इति ।
 तत्रतत्रतत्र तत्रतत्र ननु तत्रतत्र नै इति, तत्रतत्र नदी तत्र नै इति ।
 तत्रतत्र नदी तत्र नै इति, तत्रतत्र नदी तत्र नै इति । तत्रतत्र
 तत्रतत्र नदी तत्र नै इति, तत्रतत्र नदी तत्र नै इति । तत्रतत्र
 तत्रतत्र नदी तत्र नै इति, तत्रतत्र नदी तत्र नै इति । तत्रतत्र
 तत्रतत्र नदी तत्र नै इति, तत्रतत्र नदी तत्र नै इति । तत्रतत्र

वन्द्योऽर्थीय - तत्र - सधित - मुम्भराज -
 शासनसि रयः भवतं ननुते निगलम् ।
 त्र्यादीन्वदनु-दिर्यामयत् - तयो विमान
 विन्तं त्वेतिप पशोभत - तत्रत - त्र्ये ॥२६॥

प्रकरणे :-

| | |
|-------------|------------------------------|
| तत्रः | ३३ |
| तत्रात्तत्र | तत्रोक्तं तत्र तत्रोक्ति |
| नदीतत्र | विमानतः |
| तत्रतत्र | तत्र तत्रोक्तं तत्रतत्रोक्ति |
| तत्रतत्र | तत्रतत्र |
| विमानतः | तत्रतत्र |
| तत्रतत्र | तत्रतत्र |

| | |
|----------------|-------------------------|
| कपयः | कपयः |
| तत्र | तत्रतत्र तत्र |
| तत्रतत्र | तत्रतत्र तत्र |
| विमानतः | तत्रतत्र तत्र |
| तत्र तत्रोक्तं | तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र |
| तत्रतत्र | तत्रतत्र |
| तत्रतत्रवि | तत्रतत्रतत्र |
| तत्र | तत्रतत्र |
| विमानतः | विमानतः तत्रतत्र |
| तत्रतत्र | तत्रतत्रतत्र तत्रतत्र । |

सद्यसि—हे मृगशाख ! तत्रतत्र दृष्टव्यं तत्रतत्र तत्र तत्रतत्रतत्र तत्र
 तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र तत्र ।
 तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र तत्र
 तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र तत्र
 तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र तत्र

विमानतः सधित - तत्रतत्र-विमान - तत्रतत्र
 विमानतः तत्र तत्र तत्रतत्रतत्रतत्र ।
 विन्तं विमानतः तत्रतत्र तत्र तत्रतत्र
 तत्रतत्रतत्र तत्रतत्र तत्रतत्र तत्रतत्र ॥२६॥

प्रकरणे :-

| | |
|---------|------------------|
| विमानतः | विमानतः तत्रतत्र |
| विमानतः | विमानतः तत्रतत्र |
| विमानतः | विमानतः तत्रतत्र |

मन्त्रोऽपि विना । वाक्येनोपदेशात् । अने की वाक्ये वाक्ये
के वाक्ये विना ही वाक्येनोपदेशात् । अने वाक्ये वाक्ये । अने वाक्ये
वाक्ये । अने वाक्ये वाक्ये । अने वाक्ये वाक्ये । अने वाक्ये वाक्ये ।

मित्रानि मे बहुविधाः समाकर्तव्यं त्वी
शत्रुत्वमप्यनुभवसंशयं मया विद्याम् ।
पक्षपातैश्च भवति स्वरथा कथमे
एतदाद्यन्तःकारं कृत्विष्यामिहमेव - हेतुः । ६५

शत्रुत्वानि-

| | |
|------------------|------------------|
| मे | मी |
| सुखिना | सुखे सुखे वाक्ये |
| समवायिना | समवाये |
| द्वेषु | द्वेषे |
| निष्पत्तिना | निष्पत्तिना |
| संशय | संशये |
| अनुभवसंशय | अनुभवसंशये |
| एव | एव |
| शत्रुत्वम् | शत्रुत्वम् |
| मया | मे |
| विद्याम् | विद्याम् |
| पक्षपातैश्च | पक्षपातैश्च |
| भवति | भवति |
| स्वरथा | स्वरथा |
| कथमे | कथमे |
| एतदाद्यन्तःकारं | एतदाद्यन्तःकारं |
| कृत्विष्यामिहमेव | कृत्विष्यामिहमेव |
| - हेतुः | - हेतुः |

| | |
|------------|------------|
| वर्ति | वर्ति |
| एव | एव |
| शत्रुत्वम् | शत्रुत्वम् |
| मया | मया |
| विद्याम् | विद्याम् |

मन्त्रोऽपि विना । वाक्येनोपदेशात् । अने की वाक्ये वाक्ये
के वाक्ये विना ही वाक्येनोपदेशात् । अने वाक्ये वाक्ये । अने वाक्ये
वाक्ये । अने वाक्ये वाक्ये । अने वाक्ये वाक्ये । अने वाक्ये वाक्ये ।

एतद हि मे अनुभवसंशयं कृत्वि
निष्पत्तिना विद्यामिहमेव - हेतुः ।
पक्षपातैश्च भवति स्वरथा कथमे
एतदाद्यन्तःकारं कृत्विष्यामिहमेव - हेतुः । ६५

शत्रुत्वानि-

| | |
|------------------|------------------|
| मे | मी |
| सुखिना | सुखे सुखे वाक्ये |
| समवायिना | समवाये |
| द्वेषु | द्वेषे |
| निष्पत्तिना | निष्पत्तिना |
| संशय | संशये |
| अनुभवसंशय | अनुभवसंशये |
| एव | एव |
| शत्रुत्वम् | शत्रुत्वम् |
| मया | मे |
| विद्याम् | विद्याम् |
| पक्षपातैश्च | पक्षपातैश्च |
| भवति | भवति |
| स्वरथा | स्वरथा |
| कथमे | कथमे |
| एतदाद्यन्तःकारं | एतदाद्यन्तःकारं |
| कृत्विष्यामिहमेव | कृत्विष्यामिहमेव |
| - हेतुः | - हेतुः |

धीमहिजायमन्त्रिणः पदावै शाली
 यद्वर्णने संक्षमलं संज्ञि मुनः शाली ।
 इ गुरुः ॥ मन्त्रः अथमानसदीक्षाणी
 दीमोऽनस्यवति नाथ । अन्वप्रशासः ॥ १२६ ॥

वाक्यान्तः—

| | |
|-------------------------------------|--|
| इ गुरुः | इ गुरुः ॥ |
| देवानः | देवादिभिः |
| धीमहिजायमन्त्रिणः | धीमन्त्रिणां शालीनाम् ॥ शिवोऽथवा अथवा शालीनाम् |
| यद्वर्णने संक्षमलं संज्ञि मुनः शाली | यथा—अथवा शिवोऽथवा शालीनाम् अथवा शिवोऽथवा शालीनाम् |
| मन्त्रः अथमानसदीक्षाणी | मन्त्रः अथमानसदीक्षाणी |
| दीमोऽनस्यवति नाथ | दीमोऽनस्यवति नाथ |
| अन्वप्रशासः | अन्वप्रशासः |
| ॥ १२६ ॥ | ॥ १२६ ॥ |

वाक्यान्तः—इ गुरुः ॥ इ गुरुः ॥ इ गुरुः ॥ इ गुरुः ॥
 देवानः ॥ देवानः ॥ देवानः ॥ देवानः ॥
 धीमहिजायमन्त्रिणः ॥ धीमहिजायमन्त्रिणः ॥
 यद्वर्णने संक्षमलं संज्ञि मुनः शाली ॥ यद्वर्णने संक्षमलं संज्ञि मुनः शाली ॥
 मन्त्रः अथमानसदीक्षाणी ॥ मन्त्रः अथमानसदीक्षाणी ॥
 दीमोऽनस्यवति नाथ ॥ दीमोऽनस्यवति नाथ ॥
 अन्वप्रशासः ॥ अन्वप्रशासः ॥

मन्त्राणांशुदुःखी दन्ता शालीनी,
 निच विज्ञानादि अथमन्त्रिणः ॥
 शालीनी शालीनिनी शालीनी,
 शालीनिनी शालीनिनी शालीनी ॥ १२७ ॥

वाक्यान्तः—

| | |
|-------------------------------------|--|
| इ गुरुः | इ गुरुः ॥ |
| देवानः | देवानः ॥ |
| मन्त्रः | मन्त्रः ॥ |
| यद्वर्णने संक्षमलं संज्ञि मुनः शाली | यथा—अथवा शिवोऽथवा शालीनाम् अथवा शिवोऽथवा शालीनाम् |
| मन्त्रः अथमानसदीक्षाणी | मन्त्रः अथमानसदीक्षाणी |
| दीमोऽनस्यवति नाथ | दीमोऽनस्यवति नाथ |
| अन्वप्रशासः | अन्वप्रशासः |
| ॥ १२७ ॥ | ॥ १२७ ॥ |

वाक्यान्तः—इ गुरुः ॥ इ गुरुः ॥ इ गुरुः ॥ इ गुरुः ॥
 देवानः ॥ देवानः ॥ देवानः ॥ देवानः ॥
 मन्त्रः ॥ मन्त्रः ॥ मन्त्रः ॥ मन्त्रः ॥
 यद्वर्णने संक्षमलं संज्ञि मुनः शाली ॥ यद्वर्णने संक्षमलं संज्ञि मुनः शाली ॥
 मन्त्रः अथमानसदीक्षाणी ॥ मन्त्रः अथमानसदीक्षाणी ॥
 दीमोऽनस्यवति नाथ ॥ दीमोऽनस्यवति नाथ ॥
 अन्वप्रशासः ॥ अन्वप्रशासः ॥

... ..

... ..

संज्ञा

Table with 2 columns: Sanskrit terms and their meanings.

... ..

... ..

संज्ञा

Table with 2 columns: Sanskrit terms and their meanings.

आम्हो निराला निरली निरमे रमे त्,
दुदाशर दुदगर्भवमि नीधमन्तः ।
आम्हो हि तस्य नवमाशरता वताम्हे,
निस्तीरोर मलिभ्यावृणवारी इम्मे ॥१९५॥

पदवार्थ—

| | |
|---------------------|------------------------|
| नमः | नाम श्रवाणी |
| निरमे रमे त् | उक्त निरवादि ३ |
| निराला निरली | कदाचि वृणव |
| दुदाशर | दुद दुदश शर |
| दुदगर्भवमि नीधमन्तः | दुदगर्भव नीधमन्तः |
| आम्हो | ३ |
| हि | इति |
| नवमाशरता वताम्हे | उक्तं नव माशरता व |
| ३ | ३ |
| मलि | मलि |
| नवमाशरता वताम्हे | उक्तं नवमाशरता वताम्हे |
| निस्तीरोर | निस्तीरोर |
| इम्मे | इति ३ |

वार्थ—आम्हो निराला निरली निरमे रमे त्,
दुदाशर दुदगर्भवमि नीधमन्तः ।
आम्हो हि तस्य नवमाशरता वताम्हे,
निस्तीरोर मलिभ्यावृणवारी इम्मे ॥१९५॥

नवमाशरता वताम्हे निराला,
दुदगर्भवमि नीधमन्तः ।
आम्हो हि तस्य नवमाशरता वताम्हे,
निस्तीरोर मलिभ्यावृणवारी इम्मे ॥१९५॥

पदवार्थ—

| | |
|------------------|------------------------|
| नवमाशरता वताम्हे | उक्तं नव माशरता व |
| निराला | उक्तं निरवादि ३ |
| दुदगर्भवमि | दुदगर्भव नीधमन्तः |
| नीधमन्तः | नीधमन्तः |
| आम्हो | ३ |
| हि | इति |
| नवमाशरता वताम्हे | उक्तं नव माशरता व |
| ३ | ३ |
| मलि | मलि |
| नवमाशरता वताम्हे | उक्तं नवमाशरता वताम्हे |
| निस्तीरोर | निस्तीरोर |
| इम्मे | इति ३ |

वार्थ—आम्हो निराला निरली निरमे रमे त्,
दुदाशर दुदगर्भवमि नीधमन्तः ।
आम्हो हि तस्य नवमाशरता वताम्हे,
निस्तीरोर मलिभ्यावृणवारी इम्मे ॥१९५॥